जनजातियों में शिक्षा की प्रगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)

आनन्द कुमार सिंह
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा
जिला–रीवा (म.प्र.)

वर्तमान शोध पत्र में शोधार्थी ने कुछ शोध उपकरणों की सहायता ली है, जिसके द्वारा एकत्रित तथ्यों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या द्वारा वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गयी। इस पत्रक के द्वारा न्यादर्श हेतु चयनित प्रत्येक विद्यालय, कुल 100 विद्यालयों के अभिलेखों का अवलोकन कर शोध अध्ययन से सम्बंधित जानकारी संकलित की गयी है, तथा छात्र–छात्राओं की संख्या 300 है। शोधार्थी ने इस प्रश्नावली के माध्यम से न्यादर्श हेतु चयनित प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, जिनकी कुल संख्या 100 है, से सम्बंधित जानकारी संकलित की है।

सारणी क्रमांक 1
विगत पाँच वर्षों में अध्ययन हेतु नामांकित जनजातीय छात्रों के परिवर्तन की स्थिति

क्र.	विषय वस्तु	विद्यालय प्रमुख का मत	
		संख्या	प्रतिशत
1	लगभग एक जैसी	50	**50.00**
2	नामांकन घटा है	05	**05.00**
3	नामांकन में धीमी गति से वृद्धि हो रही है	40	**40.00**
4	नामांकन तेजी से बढ़ है	05	**05.00**
	योग	**100**	**100**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 50.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों का मत है कि जनजातीय छात्रों की नामांकन स्थिति लगभग एक जैसी है। जबकि रीवा जिले के 05.00 प्रतिशत संस्था प्रमुखों ने स्पष्ट किया कि नामांकन किसी भी प्रकार की कमी नहीं हुई है। 40.00 प्रतिशत हेड मास्टर ने अपना मत व्यक्त किया है कि नामांकन में धीमी गति से वृद्धि हो रही है। दूसरी तरफ 05.00 प्रतिशत हेड मास्टर ने माना की नामांकन तेजी से बढ़ रहा है।

सारणी क्रमांक 2
जनजातीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शासकीय व्यवस्था की स्थिति

क्र.	विषय वस्तु	अध्यापक मत	
		हाँ	नहीं
1.	अधिक से अधिक जनजातीय क्षेत्रों में विद्यालय की स्थापना	30	**05**
2.	विद्यालय में जनजातीय कल्याण से संबंधित अधिक पाठ्यक्रम का संचालन	20	**03**
3.	जनजातीय शिक्षा हेतु आदर्श विद्यालय की स्थापना	15	**00**
4.	विद्यालय में अधिक से अधिक तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता	05	**00**
5.	शैक्षिक नवाचार एवं शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियों का प्रयोग	10	**00**
6.	जनजातीय शिक्षा में परिवर्तन के लिए राजनैतिक व सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता	10	**02**
	योग	**90**	**10**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि जनजातीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए रीवा जिले की प्रशासकीय व्यवस्था की स्थिति की जानकारी प्राप्त

करने का प्रयास किया है। सारणी से स्पष्ट है कि इस क्षेत्र विशेष के 05 प्रधानाध्यापकों का अभिमत है कि जनजातीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अधिक से अधिक विद्यालयों की स्थापना क्षेत्र विशेष में किया जाना चाहिए। जबकि प्रधानाध्यापकों ने शिक्षा के लिए विद्यालय में जनजातीय कल्याण से संबंधित पाठ्यक्रम कि बात कहीं है जिससे जनजातीय में शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। 07 प्रधानाध्यापक ने जनजातीय शिक्षा हेतु आदर्श विद्यालय का संचालन कि बात मानी है, जबकि शत प्रतिशत प्रधानाध्यापकों ने तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित किया जाये तथा शत–प्रतिशत प्रधानाध्यापकों का अभिमत हैं कि जनजातियों में शिक्षा को प्रोत्साहित करने व विकसित करने के लिए विद्यालयों शैक्षिक नवाचार एवं शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियों का प्रयोग किया जाय। 19 प्रधानाध्यापकों का मत है कि जनजातीय शिक्षा में परिवर्तन के लिए राजनैतिक व सामाजिक परिवर्तन कि आवश्यकता मानी है तभी अन्य क्षेत्रों में हम जनजातियों को शिक्षा के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

सारणी क्रमांक 3
अधिकारी साक्षात्कार पत्रक के आधार पर प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर जनजातीय बालक/बालिकाओं के नामांकन दर में वृद्धि का अध्ययन

तहसील	अधिकारियों की संख्या	बालक/बालिकाओं के नामांकन दर में					
		वृद्धि हुई है		वृद्धि नहीं हुई है		नहीं पता	
		संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
हुजूर	05	04	80	00	00	01	**20**
रायपुर कर्चु	05	04	80	01	20	00	**00**
गुढ़	05	03	60	01	20	01	**20**
सिरमौर	**05**	**04**	**80**	**01**	**20**	**00**	**00**

स्रोत–सर्वेक्षण के अनुसार।

अधिकारी साक्षात्कार पत्रक के आधार पर प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर जनजातीय बालक/बालिकाओं के नामांकन दर में वृद्धि का अध्ययन उपरोक्त सारणी के माध्यम से किया गया है। सारणी एवं ग्राफ के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि रीवा जिले की हुजूर तहसील के अध्ययनरत 80.00 प्रतिशत अधिकारियों के मतानुसार प्रारम्भिक स्तर के जनजातीय छात्र–छात्राओं के नामांकन में वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि 20.00 प्रतिशत अधिकारियों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। रायपुर कर्चुलियान तहसील के अध्ययनरत 80.00 प्रतिशत अधिकारियों के मतानुसार प्रारम्भिक स्तर के छात्र–छात्राओं के नामांकन में वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि 20.00 प्रतिशत अधिकारियों के अनुसार वृद्धि दर्ज नहीं की गई है। गुढ़ तहसील के अध्ययनरत 60.00 प्रतिशत अधिकारियों के मतानुसार प्रारम्भिक स्तर के छात्र–छात्राओं के नामांकन में वृद्धि दर्ज की गई है, 20.00 प्रतिशत अधिकारियों के अनुसार वृद्धि दर्ज नहीं की गई है, जबकि 20.00 प्रतिशत अधिकारियों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। सिरमौर तहसील के अध्ययनरत 80.00 प्रतिशत अधिकारियों के मतानुसार प्रारम्भिक स्तर के छात्र–छात्राओं के नामांकन में वृद्धि दर्ज की गई है, 20.00 प्रतिशत अधिकारियों के अनुसार वृद्धि दर्ज नहीं की गई है।

सारणी क्रमांक–4
प्रधानाध्यापक साक्षात्कार पत्रक के आधार पर शाला में प्रवेश न लेने वाले जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या का अध्ययन

तहसील	विद्यालयों की संख्या	प्रधानाध्यापकों की संख्या	शाला में प्रवेश न लेने वाले बालक–बालिकाओं की संख्या					
			लगातार घट रही है		नहीं घट रही है		नहीं पता	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
रीवा	25	25	23	92	01	04	01	**04**
रायपुर कर्चु	25	25	24	96	00	00	01	**04**
गुढ़	25	25	20	80	03	12	02	**08**
सिरमौर	**25**	**25**	**21**	**84**	**02**	**08**	**02**	**08**

स्रोत–सर्वेक्षण के अनुसार।

प्रधानाध्यापक साक्षात्कार पत्रक के आधार पर शाला में प्रवेश न लेने वाले जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या का अध्ययन उपरोक्त सारणी के माध्यम से किया गया है। सारणी से स्पष्ट होता है कि रीवा जिले की हुजूर तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 92.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 04.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों के मतानुसार संख्या नहीं घट रही है तथा 04.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। रायपुर कर्चुलियान तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 926.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, तथा 04.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। गुढ़ तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 80.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 12.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों के मतानुसार संख्या नहीं घट रही है तथा 08.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। सिरमौर तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 84.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 048.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों के मतानुसार संख्या नहीं घट रही है तथा 08.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है।

सारणी क्रमांक–5
शिक्षक प्रश्नावली पत्रक के आधार पर शाला न जाने वाले जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या का अध्ययन

तहसील	विद्यालयों की संख्या	शिक्षकों की संख्या	शाला न जाने वाले बालक–बालिकाओं की संख्या					
			लगातार घट रही है		लगातार नहीं घट रही है		नहीं पता	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
हुजूर	25	25	24	96	00	00	01	**04**
रायपुर कर्चु	25	25	22	88	02	08	01	**04**
गुढ़	25	25	19	76	04	16	02	**08**
सिरमौर	**25**	**25**	**20**	**80**	**03**	**12**	**02**	**08**

स्रोत–सर्वेक्षण के अनुसार।

उपरोक्त सारणी में शिक्षक प्रश्नावली पत्रक के आधार पर शाला न जाने वाले जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या का अध्ययन किया गया है। सारणी से स्पष्ट होता है कि रीवा जिले की हुजूर तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 96.00 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, जबकि 04.00 प्रतिशत शिक्षकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। रायपुर कर्चुलियान तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 88. 00 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 08.00 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या नहीं घट रही है जबकि 04.00 प्रतिशत शिक्षकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। गुढ़ तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 76.00 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 16.00 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या नहीं घट रही है जबकि 08.00 प्रतिशत शिक्षकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। सिरमौर तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 80.00 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 12.00 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या नहीं घट रही है जबकि 08.00 प्रतिशत शिक्षकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है।

सारणी क्रमांक–6
पालक–शिक्षक संघ के साक्षात्कार पत्रक के आधार पर शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या का अध्ययन

तहसील	विद्यालयों की संख्या	पालक–शिक्षक संघ के अध्यक्षों की संख्या	शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या					
			लगातार घट रही है		लगातार नहीं घट रही है		नहीं पता	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
हुजूर	25	20	18	90	01	05	01	**05**
रायपुर कर्चु	25	20	18	90	00	00	02	**10**
गुढ़	25	20	20	100	00	00	00	**00**
सिरमौर	**25**	**20**	**17**	**85**	**02**	**10**	**01**	**05**

स्रोत–सर्वेक्षण के अनुसार।

पालक–शिक्षक संघ के अध्यक्ष के साक्षात्कार पत्रक के आधार पर शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या का अध्ययन उपरोक्त सारणी के माध्यम से किया गया है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि रीवा जिले की हुजूर तहसील के अध्ययनरत 90.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक संघ के अध्यक्ष के अनुसार शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या में कमी दर्ज की गई है, 05.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक के मतानुसार शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार नहीं घट रही है जबकि 05.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक के अध्यक्ष को इस विषय में कोई जानकारी नहीं है। रायपुर कर्चुलियान तहसील के अध्ययनरत 90.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक संघ के अध्यक्ष के अनुसार शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या में कमी दर्ज की गई है, जबकि 02.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक के अध्यक्ष को इस विषय में कोई जानकारी नहीं है। गुढ़ तहसील के अध्ययनरत 100.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक संघ के अध्यक्ष के अनुसार शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या में कमी दर्ज की गई है। सिरमौर तहसील के अध्ययनरत 85.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक संघ के अध्यक्ष के अनुसार शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या में कमी दर्ज की गई है, 10.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक के मतानुसार शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार नहीं घट रही है जबकि 05.00 प्रतिशत पालक–शिक्षक के अध्यक्ष को इस विषय में कोई जानकारी नहीं है।

सारणी क्रमांक–7
अभिभावक प्रश्नावली पत्रक के आधार पर शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या का अध्ययन

तहसील	विद्यालयों की संख्या	अभिभावकों की संख्या	शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या					
			लगातार घट रही है		लगातार नहीं घट रही है		नहीं पता	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
हुजूर	25	30	18	60	10	33	02	**07**
रायपुर कर्चु	25	30	24	80	04	13	02	**07**
गुढ़	25	30	27	90	02	07	01	**03**
सिरमौर	**25**	**30**	**25**	**83**	**02**	**07**	**03**	**10**

स्रोत–सर्वेक्षण के अनुसार।

अभिभावक प्रश्नावली पत्रक के आधार पर शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या का अध्ययन का अध्ययन उपरोक्त सारणी में

किया गया है। सारणी के अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि रीवा जिले की हुजूर तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 60.00 प्रतिशत अभिभावकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 33.00 प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार नहीं घट रही है जबकि 07.00 प्रतिशत अभिभावकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। रायपुर कर्चुलियान तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 80.00 प्रतिशत अभिभावकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 13.00 प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार नहीं घट रही है जबकि 07.00 प्रतिशत अभिभावकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। गुढ़ तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 90.00 प्रतिशत अभिभावकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 07.00 प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार नहीं घट रही है जबकि 03.00 प्रतिशत अभिभावकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। सिरमौर तहसील के अंतर्गत अध्ययनरत 83.00 प्रतिशत अभिभावकों का मानना है कि शाला अप्रवेशी जनजातीय बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है, 07.00 प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार बालक–बालिकाओं की संख्या लगातार नहीं घट रही है जबकि 10.00 प्रतिशत अभिभावकों को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है।

संदर्भ–

1. नेताम, कैलाश सिंह, शहडोल जिले के आदिवासियों पर भौगोलिक वातावरण का प्रभाव, पी–एच.डी. शोध प्रबंध, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि. रीवा।
2. शर्मा डॉ.बी.डी. आदिवासी विकास एक सैद्धांतिक विवेचन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंन्थ अकादमी, भोपाल
3. उपाध्याय विजयशंकर एवं शर्मा विजय प्रकाश (1989) भारत की जनजातीय संस्कृति म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल